आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13
सृष्टि संवत् 1960853113
विक्रम संवत् 2069
दयानन्दाब्द 189

॥ ओ३म ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 9 अंक : 38 रोहतक, 7 मार्च, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न

❑ सत्यवीर शास्त्री, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

17 फरवरी 2013 को दयानन्द मठ रोहतक में हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का आरम्भ बादलों की गड़गड़ाहट तथा वर्षा की बौछारों से हुआ। वर्षा एवं बिजली की

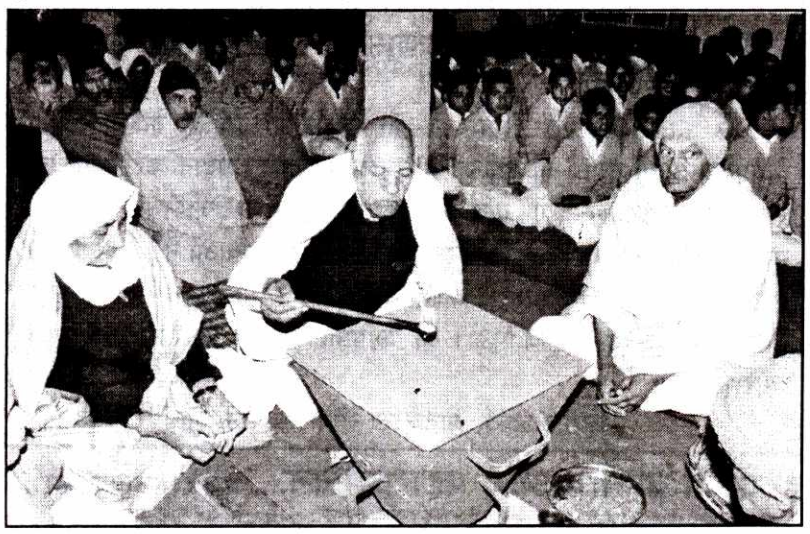

कड़कड़ाहट के साथ उपरोक्त कारणों से सर्दी का प्रकोप भी अत्यन्त भयंकर था। ऐसी विषम परिस्थिति में भी आर्यजनों की विशाल जनसंख्या को देखकर सामान्य जन हैरान थे। इस सम्मेलन में वैदिक विद्वान् देहली विधान सभा के अध्यक्ष मान्यवर डॉ० योगानन्द जी ने भी उपस्थित होना था। प्रात: लगभग 6 बजे डॉक्टर साहब का दूरभाष, सभामन्त्री सत्यवीर शास्त्री के पास पहुंचा। डॉ० साहब ने दूरभाष के माध्यम से कहा कि ऐसी विषमता में तो सम्मेलन का होना सम्भव नहीं है। क्या आप सम्मेलन को स्थगित कर रहे हैं ? सभामन्त्री ने उत्तर में डॉ० साहब को कहा—कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो, आर्यजन रुकना और झुकना नहीं जानते। डॉ० योगानन्द जी का भी बाल्यावस्था एवं युवावस्था का जीवन त्याग व तपस्यामय रहा है। अत: वे भी ठीक 11 बजे देहली से चलकर सभास्थल पर पहुंच गये। बहुत से जन ऐसी विषम स्थिति में विशाल जनसमूह को देखकर कहते हुये सुने गये कि यह विशाल जनसंख्या आचार्य बलदेव, आचार्य विजयपाल के त्याग, तप एवं सभामन्त्री सत्यवीर शास्त्री, सभा वेदप्रचार अधिष्ठाता आचार्य अभय जी तथा सभा के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के परिश्रम का ही सुफल है।

'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म'

सम्मेलन ठीक 8 बजे यज्ञ के पवित्र कर्म से आरम्भ हुआ। यज्ञ गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य ऋषिपाल जी के ब्रह्मत्व में आरम्भ हुआ। यज्ञ के यजमान के रूप में सभामन्त्री सत्यवीर शास्त्री जी अपनी धर्मपत्नी सावित्री देवी जी के साथ उपस्थित हुए। यज्ञ आरम्भ होने पर हरयाणा सरकार के पूर्वमन्त्री चौ० हरिसिंह सैनी भी हिसार से सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं के साथ यज्ञ में सम्मिलित हुए। यज्ञ का संयोजन सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष एवं गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के अधिष्ठाता मा० जिलेसिंह जी कर रहे थे।

यज्ञ आरम्भ होने पर वेदमन्त्रों की अमृतवाणी आकाश में गुंजायमान होने लगी। समस्त वायुमण्डल घृतसामग्री की सौरभ से शोभायमान व प्रफुल्लित हो रहा था। यज्ञ के मध्य सभा की उपमन्त्री बहन सुमित्रा वर्मा एवं बहन सन्तोष आर्या ऐंचरा भी अपने स्कूल व गुरुकुल की छात्र व छात्राओं के साथ यज्ञ में उपस्थित हुई। 45 मिनट यज्ञ का कार्यक्रम चलता रहा। यज्ञ के उपरान्त बहन सुमित्रा वर्मा के अमृतवाणी में यज्ञसम्बन्धी भजनों का श्रद्धालुजनों से रसास्वादन किया।

तदुपरान्त यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य ऋषिपाल जी ने निम्न मन्त्र से वेदोपदेश दिया—

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म-वर्चसे नान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे...इदन्न मम॥

जातवेद-हे सृष्टि की रचना करने वाले, पालन करने वाले व धारण करने वाले परमपिता परमेश्वर! अयन्त

इध्म-यह ईंधन अर्थात् घी, सामग्री एवं समिधाएँ हमारी आत्मा को, हमारी प्रजा को, हमारे पशुओं को, हमारे अन्न, वनस्पति तथा औषधियों को सूक्ष्म होकर वृद्धि करती रहे। पूज्य आचार्य ऋषिपाल जी ने इस मन्त्र की वैज्ञानिक व्याख्या करते हुए कहा कि जिस प्रकार से एक परिवार में रहने वाले दश सदस्य सब्जी में पड़ी हुई मिर्चों को स्वाद के साथ आनन्द से खाते हैं। यदि उस मात्रा में उन मिर्चों को प्रज्वलित अग्नि में डाल दिया जाये तो वहाँ पर सैकड़ों व्यक्ति भी नहीं ठहर पायेंगे। इसका अभिप्राय यह हुआ कि उन मिर्चों को खाने से वह प्रभाव नहीं हुआ जो कि अग्नि में डालने से हुआ। क्योंकि अग्नि प्रत्येक पदार्थ को सूक्ष्मतम कर देती है और वैज्ञानिक सूत्र के अनुसार जो पदार्थ जितना सूक्ष्म होगा उसकी उतनी ही अधिक शक्ति बढ़ जायेगी। अत: दश मनुष्य भोजन में जिस मात्रा के घी का प्रयोग करते हैं। अग्नि यज्ञ के द्वारा उसी मात्रा के घी को सैकड़ों जनों को उसी मात्रा में लाभ पहुंचा देती है। उन मनुष्यों के लिए यह उत्तर है कि जो मनुष्य यह कहकर वितण्डावाद करते हैं कि ये आर्यसमाजी घी को व्यर्थ अग्नि में डालकर नष्ट कर देते हैं, वास्तव में कोई पदार्थ मूलरूप से कभी नष्ट नहीं होता केवल मात्र उसका रूप परिवर्तन होता है। अत: वेद के मन्त्र का यह कथन सत्य है कि यह यज्ञ में डाला गया घृत तथा सामग्री हमारी प्रजा की वृद्धि करे।

जल से घृत का वजन भारी होता है। अत: यज्ञ द्वारा भारी घृत के वाष्प

शेष पृष्ठ 2 पर....

सुखी जीवन का उपदेश

❑ दयाकिशन सैनी, सैनीपुरा, रोहतक

आज देश स्वतन्त्रता के 66वें वर्ष में प्रवेश कर गया है। पर बड़े दु:ख की बात है कि आज भी देश में गरीबी, भ्रष्टाचार, अंधकार, विवशता ज्यों की त्यों बनी हुई है। यह बड़े दु:ख की बात है कि हमारे देश के युवक, युवतियाँ अविद्या-अन्धकार में डूबे हुए हैं। इससे देश का उत्थान नहीं हो सकता। हमारे स्वतन्त्र सेनानियों ने अपना जीवन हंसते-हंसते कुर्बान कर दिया और देश के नौजवानों से कहा अब हम चलते हैं आप इस देश को सम्भालना यह कहते-कहते फांसी के फन्दों पर झूल गये। इससे नवयुवकों ने क्या शिक्षा ली? क्या हमारे शहीदों का बलिदान यूं ही चला जायेगा? इसीलिए नौजवानों खड़े हो जाओ और देश से अविद्या, अन्धकार, भ्रष्टाचार, अनाचार, व्यभिचार, रिश्वतखोरी, चोरी, ठगी, मिलावट, बेईमानी, झूठ-छल-कपट नाना प्रकार के व्यसन अति संग्रह आदि रोगों को मिटाकर खाक कर दो। अब से ही यह प्रण करो कि देश को फिर से वही मान-सम्मान दिलाकर रहेंगे। देश में कोई भी भूखा, नंगा नहीं रहने दिया जायेगा। जो झूठ-कपट, अन्याय करेगा उसको दण्ड दिया जायेगा। क्योंकि बिना कठोर दण्ड के राज नहीं चलता। यदि कठोर दण्ड की विवशता हो तो कोई भी अपराध नहीं करेगा। मैं देशवासियों की हालत देखकर बहुत रोता हूँ कि 30 प्रतिशत मनुष्य खुले आकाश के नीचे रात बिताते हैं और इतनी ही संख्या के मनुष्य भूखे पेट सोने पर विवश हैं। मैं शहरों में देखता हूँ कि कितने ही बच्चे, स्त्रियां गन्दे कूड़े के ढेरों से कचरा बिनकर अपने पेट की आग बुझाते हैं। आजादी के 66 वर्षों में भी हमारी यह हालत है। इसका कौन जिम्मेवार है? एक तरफ बड़े-बड़े सेठों व नेताओं के बंगलों में आतिशबाजी चल रही है और दूसरी ओर गरीब असहाय का बच्चा बिना दवा के दम तोड़ रहा है। क्या कर रहे हैं हमारे नेतागण, क्या है यह अव्यवस्था इसका कारण जानो।

आज देश में हमारों भगवान् बने बैठे हैं। हजारों प्रकार से देश को लूट रहे हैं। इनमें से अधिक लोग चोर-जार बदमाश हैं और अपने स्वार्थ के लिये सुबह से शाम तक झूठ-कपट का प्रचार करते हैं और पाँच-सात मन्दिर ऐसे हैं जिनमें अरबों-खरबों का धन जमा है और उनके महन्त सोने के कड़े अंगूठी बड़ी-बड़ी मालायें पहन कर झूठे उपदेश करते रहते हैं। क्या इस धन से बड़े-बड़े विद्यालय नहीं चलाये जा सकते? आज हमारे राजनेता भी इसी कुप्रथा में लगे हुये हैं। जो निश्चय ही देश को अंधकार की तरफ धकेल रहे हैं। यदि इसी प्रकार यह देश चलता रहा तो बहुत लज्द ही विनाश के गड्ढे में गिर जावेगा और हमारे पास सिवाय रोने के कुछ नहीं रहेगा। अंत में मैं माताओं, बहनों तथा बेटियों को भी यह कहना चाहता हूँ कि अपनी सन्तानों को योग्य बनाओ, अच्छे-अच्छे संस्कार दो, अच्छे विद्वान् सज्जन पुरुषों के सत्संग में भेजो, नहीं तो आपकी संतान अच्छे संस्कार वाली नहीं होगी, क्योंकि जब माता-पिता तथा गुरुजन अच्छे होंगे तभी संतान सुसंस्कार वाली होगी जैसा कि चाणक्य ऋषि ने कहा है—

माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये वको यथा॥

वह विद्वानों की सभा में ऐसे तिरस्कृत-बेईज्जत होते हैं जैसे हंसों के बीच बगुला। इसलिये उन्हें खूब पढ़ा-लिखाकर होनहार बनाओ नहीं तो वह अविद्या-अन्धकार में फंसा रहेगा। अपने घर, परिवार, ग्राम तथा कस्बे, शहर को भी कलंकित करता रहेगा और आपको नये-नये उलाहने रोजाना दिलाता रहेगा। दूसरी बात यह समझानी है कि—

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत्।
आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः॥

अर्थात् अपने से बड़ी स्त्रियों को माता के समान समझें और अपनी बराबर की सभी बहनों को बहन समझें और अपने से छोटी बेटियों को बेटी समझें और अपने आत्मा के समान सभी प्राणियों को अपने आत्मा के समान समझें किसी का गला काटने से पहले उसी चाकू छुरी को अपने शरीर में चुभाकर देखें कितना दर्द होता है। जो इस बात को समझेगा वही समझदार है, पंडित है। यह उपदेश भी चाणक्य ऋषि का है। यदि ऐसी शिक्षा बच्चों को देती रहीं तो आपका जीवन सफल हो जायेगा और आपके बच्चे भी सुखी जीवन बिता सकेंगे, क्योंकि—

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम्॥

इस परिवर्तनशील संसार में हर मनुष्य का जन्म-मरण निश्चित है, परन्तु उसी मनुष्य का जीवन सार्थक है जिसके कार्यों से उसका परिवार, समाज व राष्ट्र उन्नति करता है। इसीलिये अपने बच्चों को होनहार बनाओ, इससे सरल मार्ग और कोई नहीं है तथा सत्य पर चलते रहो। क्योंकि '**सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप॥**' इसी मार्ग से तुम्हें सुख-शान्ति मिलेगी, इसी मार्ग से संसार का कल्याण होगा।

नामकरण, बृहद् यज्ञ व वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक 14 फरवरी 2013 को ग्राम भूरेवास (झज्जर) के श्री जगवीर द्वारा अपने पुत्र वेद आर्य का नामकरण संस्कार करवाया। यज्ञ-संस्कार के मर्मज्ञ आचार्य वेदमित्र जी ने संस्कारविधि के अनुसार संस्कार करवाया। आचार्य जी ने चरक ऋषि के अनुसार 6 माह के गर्भस्थ बालक पर अभिमन्यु की तरह पड़ने वाले संस्कार भाव की विस्तृत व्याख्या की। मन तथा हृदय के सामञ्जस्य से बालक तथा माँ का शाश्वत सम्बन्ध सुसन्तान के निर्माण का आधार होता है। ऋषियों ने गर्भस्थ बालक को संस्कारित करने की सुपरम्परा हमें प्रदान की है। कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य तथा अनेक शिक्षाविद् उपस्थित थे। तत्पश्चात् आचार्य जी द्वारा अकेहड़ी मदनपुर में बृहद् यज्ञ व उपदेश का कार्यक्रम हुआ। आचार्य जी के ब्रह्मत्व में अनेक युवा, स्त्री-पुरुषों ने यज्ञ में भाग लिया। आचार्य जी ने अपने उद्बोधन में भौतिक उन्नति को धार्मिकता के बिना अधूरी उन्नति कहा। भारत में गृहस्थ, समाज व जीवन शैली में पदे-पदे धर्म के भावों को वेदानुसार वर्णन किया। ठेकेदार राजवीर ने यज्ञ की व्यवस्था की।

15 फरवरी को 2013 ग्राम खेड़का में भी आचार्य जी के सान्निध्य में वेदोपदेश किया गया। आचार्य जी ने मनुष्य को देवत्व प्रदान करने वाले वेद को पढ़ने का उपदेश दिया। गांव के शिक्षित रविन्द्र तथा इंजीनियरिंग छात्र को मुख्य यजमान बनाया। यज्ञ में अनेक माताओं तथा कन्याओं ने भी यज्ञोपवीत धारण कर यज्ञ में आहुति प्रदान की। आचार्य जी के ग्राम सुलभ व्याख्यान से माताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा। श्री ऋषिपाल जी ने कार्यक्रम की सुन्दर व्यवस्था की।

—**नवीन आर्य,** पातञ्जल योगाश्रम भऊ आर्यपुर (रोहतक)

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

कण हल्के जलकणों को पर्वतों व वृक्षों से टकराकर वर्षा में परिवर्तन कर देते हैं जिससे वर्षा हो जाती है। वृष्टि से पृथ्वी पर अन्न, वनस्पतियों, पशुओं का चारा तथा औषधियों की उत्पत्ति होती है। अन्न, वनस्पति, ओषधियों व पशुओं के चारे से प्रजा एवं पशुओं की वृद्धि होती है।

आत्मा की वृद्धि-महाभारत में एक कथा द्वारा अतिथि यज्ञ की महिमा का वर्णन किया गया है। वह इस प्रकार है—कुरुक्षेत्र में एक मुद्गल गोत्रीय ब्राह्मण परिवार रहता था। वह परिवार सात दिन में खेतों में शिला इकट्ठा करके एक दिन भोजन करता था। सात दिन उपरान्त जब भोजन का समय आया तो एक ऋषि ने आकर उस परिवार से भोजन की भिक्षा मांगी। ब्राह्मण परिवार ने अपना समस्त भोजन ऋषि की क्षुधा निवृत्ति के लिये भोजन भिक्षा में दे दिया। कहते हैं कि हर सप्ताह ऋषि उनके भोजन के समय भिक्षा लेने पहुंच जाता, पढ़ा जाता है कि ब्राह्मण परिवार ने अपने प्राण त्याग दिये परन्तु अतिथि यज्ञ को नहीं छोड़ा। इसका यह अभिप्राय हुआ कि जो यजमान यज्ञ में घृत, सामग्री की आहुति डालकर यह सुन्दर वाक्य '**ओम् स्वाहा इदन्न मम**' बोलना है। इस कथन का अभिप्राय यह है कि हे परमपिता परमात्मन्! ये जो संसार के भोग्यपदार्थ आपने मुझे दिये हैं, वे मेरे नहीं हैं। आपके दिये हुये ये समस्त पदार्थ आपके ही हैं। इसलिये आपके दिये हुए इन पदार्थों को केवल स्वयं भोगने का मुझे अधिकार नहीं है। वेद में सच ही कहा है—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

ईश्वर की सृष्टि में जो कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है, उन समस्त पदार्थों में ईश्वर का निवास है। वह समस्त प्राणियों को देख रहा है। अतः अपनी परिश्रम की कमाई जो कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त है उसका सबके साथ मिलकर भोग करो। किसी के धन का लालच मत करो। **क्रमशः**

* ओ३म् *

चमकने के लिए

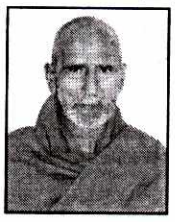

-: वेदमन्त्र :-

ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत्।
इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ॥ 8 ॥ 182 ॥ (सामवेद)

इस मन्त्र में कहते हैं कि यत् = जब [इन्द्रः] = इन्द्रियों का अधिष्ठाता जितेन्द्रिय जीव [चर्म इव] = चमड़े की तरह [उभे रोदसी] = दोनों द्युलोक और पृथिवी लोक को [समवर्तयत्] = ओढ़ लेता है (संवर्त = to wrap up) [तद्] = तभी [अस्य] = इसका [ओजः] = ओज (Vigour, Vitaility, Virility, Splendour) ज्योति [तित्विषे] = चमकती है।

किसी भी चीज का ओढ़ना रक्षा के उद्देश्य से होता है। वस्त्रों में से तो वर्षा का पानी सुगमता से अन्दर प्रविष्ट होकर हमें गीला कर सकता है परन्तु चर्म का आवरण तो ऐसा नहीं। यहां भी दोनों ओढ़ने योग्य वस्तुएं चर्म की तरह ही हमें सुरक्षित रखने वाली हैं।

रोदसी का अर्थ **'द्यावापृथिव्यौ'** है, पर अध्यात्म में वे बुद्धि व शरीर के वाचक होते हैं। शरीर तो पार्थिव है ही, **'मूर्ध्नो द्यौः'** यह पुरुष सूक्त का वचन मस्तिष्क व द्युलोक के सम्बन्ध की सूचना दे रहा है।

इन बुद्धि व शरीर के ओढ़ने का अभिप्राय इन्हें ही अपना रक्षक बनाने से है। मनुष्य शरीर को सदा स्वस्थ रखने का ध्यान करें और बुद्धि को सात्त्विक व तीव्र बनाने का सतत उद्योग करे तो वह इन दोनों को अपना रक्षक बनाता है। रक्षा किया हुआ स्वास्थ्य व ज्ञान मनुष्य की रक्षा करता है—जो इनका हनन करता है, वह इसके हनन से अपना ही हनन कर रहा होता है।

केवल शारीरिक उन्नति व स्वास्थ्य ही मानव का उद्देश्य नहीं। हम स्वस्थ रहकर ओक वृक्ष की तरह बड़े लम्बे-चौड़े होकर ३०० साल भी जी लिये तो यह मानव जीवन की एक सफलता तो नहीं है। इसके विपरीत हमने यदि केवल ज्ञान प्राप्ति की ओर ही ध्यान दिया और हम एक अद्भुत (Intellectual giant) बुद्धि दैत्य बन भी गये तो यह भी तो स्वास्थ्य के अभाव में व्यर्थ-सा ही होगा। मंत्र ने इसी भावना को 'उभे' शब्द से घोषित किया है। हमने स्वास्थ्य व बुद्धि दोनों का ही सम्पादन करना है। ब्रह्म और क्षत्र दोनों को श्रीसम्पन्न बनाना ही तो आदर्श है। अकेला पहलवान का शरीर व अकेली ऋषि की आत्मा मनुष्य को पूर्ण नहीं बनाती। स्वास्थ्य व ज्ञान—शरीर व बुद्धि-ब्रह्म व क्षत्र—दोनों का सम विकास होने पर ही मनुष्य की शोभा होती है।

ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्याभ्यास के लिये राजनियम आवश्यक

1. माता-पिताओं को राज्यव्यवस्था में अथवा अपने कुल में यह दृढ़ नियम बनाना चाहिये कि जितने हमारे संतान हों, वे सब ब्रह्मचर्य के साथ सम्पूर्ण विद्याओं को ग्रहण करने के लिए ब्रह्मचर्याश्रम करें। जो इसको खण्डित करे, उसे राजा और कुल के लोग बहुत दण्ड देवें। —दयानन्द वेदभाष्य ऋ० 6.52.9

2. यदि सभापति और सेनापति, मनुष्यों के सन्तानों के ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्याभ्यास आदि का प्रबन्ध करें तो सभी विद्वान् होकर अनेक उत्तम कार्यों को सिद्ध करने में और दुष्ट शत्रुओं का निवारण करने में समर्थ हो सकते हैं।

—दयानन्द वेदभाष्य ऋ० 6.62.10

3. हे प्रजाजनों! आप लोग राजा के प्रति इस प्रकार कहें—हमारे सन्तान जिस प्रकार सुशिक्षित हों, वैसे नियम आप बनाइये, जिससे कि विजय और आनन्द की वृद्धि हो। —दयानन्द वेदभाष्य ऋ० 6.19.7

4. हे मनुष्यो! जैसे सूर्य अथवा बिजली वर्षा करने के कारण सुखदायी और तेज धूप तथा वज्रपात के कारण भयदायी होते हैं, वैसे जो राजा, विद्या पढ़ने के लिए अपने सन्तानों को जो समर्पित नहीं करते हैं, उनके लिए दण्ड देने वाला हो उसे अथवा जो राजा ब्रह्मचर्य के माध्यम से सब की विद्या को बढ़ाने वाला हो, उसे ही सब लोग स्वीकार करें। —दयानन्द वेदभाष्य ऋ० 7.19.1

5. सब राजपुरुष आदि को अत्यन्त उचित है कि वे अपनी पुत्रियों तथा पुत्रों को दीर्घकाल के ब्रह्मचर्य में रखकर उन्हें विद्या और सुशिक्षा ग्रहण कराके, पूर्ण विद्या पाये हुए और परस्पर प्रसन्न हुए उन लोगों का स्वयंवर विवाह करावें, जिससे वे जब तक जीवें तब तक आनन्दित रहें।

—दयानन्द वेदभाष्य ऋ० 1.167.6

6. हे राजपुरुषो! आपस के व्यवहार से ऐश्वर्य सम्पन्न और धनवान् कुलों में उत्पन्न सभी प्रजाजनों को सत्यन्याय से सन्तुष्ट करके, ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्या-ग्रहण के लिए तुम लोग प्रवृत्त करो। जिससे किसी का भी पुत्र और पुत्री विद्या और सुशिक्षा के बिना न रहने पावे। —दयानन्द वेदभाष्य ऋ० 1.118.8

7. सभी माता-पिता आदि मनुष्यों को अपने-अपने सन्तानों में विद्या स्थापित करनी चाहिये। जैसे सूर्य प्रकाशयुक्त होता हुआ सबको प्रकाशित करके आनन्दित करता है, वैसे ही विद्यावान् पुत्र और पुत्रियाँ सब सुख प्रदान करती हैं।

—दयानन्द वेदभाष्य ऋ० 1.71.5

8. मनुष्यों को, सुख परिणाम वाले और सबके अभिलषित विद्याग्रहण नामक व्यवहार में सब जनों को प्रवृत्त करके, दुःखरूपी फल देने वाले अन्याय युक्त कर्म से उन्हें हटाकर और सब प्राणियों के ऊपर दया करके उन्हें सुखी करना चाहिये। —दयानन्द वेदभाष्य ऋ० 4.116.14

9. जैसे समुद्र में नदियां और प्राणों में विद्युत् आदि मिलती हैं, वैसे ही मनुष्य, सब पुत्रों और पुत्रियों के ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्या और व्रत सम्पूर्ण समाप्त करवा के, उनके युवावस्था में विवाह आदि द्वारा सन्तानों के उत्पन्न होने पर उनको भी विद्या और सुशिक्षा ग्रहण करावें। इसके तुल्य अथवा इससे अधिक अन्य कोई उपकार नहीं है। —दयानन्द वेदभाष्य ऋ० 1.71.7

10. अध्यापक और उपदेशक के समीप अन्य निर्दोष विदुषी स्त्रियां होवें, जिससे स्त्री और पुरुष दोनों में विद्या और सुशिक्षा समान रूप से विस्तृत होवें।

—दयानन्द वेदभाष्य ऋ० 2.41.21

11. सब मनुष्यों को पुत्रों के अध्यापक पुरुष और पुत्रियों की अध्यापिकाएँ स्त्रियाँ निरन्तर पढ़ाने के लिए नियुक्त करनी चाहियें, जिससे स्त्रियों और पुरुषों में विद्या पूर्ण प्रचार होवे। —दयानन्द वेदभाष्य ऋ० 2.41.19

—आचार्य बलदेव

आई फिर शिवरात

❑ पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य चलभाष : 9813845774

पं. नन्दलाल निर्भय

जगत जगाने के लिए आई है शिवरात।
इसी रात ने विश्व में, किया बड़ा प्रभात॥
किया बड़ा प्रभात, वह थी रात निराली।
आया था ऋषि देव दयानन्द सच्चा माली॥
उस माली ने विश्व बाग श्रद्धा से सींचा।
हरा-भरा कर दिया वेद का अजब बगीचा॥
प्यारा आर्यावर्त था, अंग्रेजों का दास।
करते थे गोरे यहाँ, बदमाशी बदमाश॥
बदमाशी बदमाश, नित्य करते थे भारी।
बदमाशों से दुखी, यहाँ जनता थी सारी॥
गर्भवती गऊमाता, नित्य जाती थीं मारी।
भोग रहे थे कष्ट, भारती सब नर-नारी॥
ईश्वर की कृपा हुई, आये ऋषि दयानन्द।
स्वामी जी ने की दया, काट दिये सब फन्द॥
काट दिये सब फन्द, वेद का नाद बजाया।
सुन ऋषि की हुंकार, दैत्य दल था दहलाया॥
मुल्ला, पंडे, पोप, पुजारी, सभी हराये।
ऋषि के आगे, नहीं ठहरने ढोंगी पाये॥
मुक्त कराओ देश को, दिये बहुत व्याख्यान।
अंग्रेजों को दो भगा, ऋषि का था ऐलान॥
ऋषि का था ऐलान, भारती वीरो! जागो।
करो परस्पर प्यार, द्वेष-घृणा को त्यागो॥
जन्म-जाति है गलत, कर्म प्रधान बताया।
छुआ-छात दो मिटा, धर्म का ज्ञान कराया॥
ऋषिवर ने निर्भय कहा, यदि चाहो कल्याण।
गऊ, ब्राह्मण, सुजन को, दो पूरा सम्मान॥
दो पूरा सम्मान, वेद पथ को अपनाओ।
दुखियों के दुःख हरो, जगत् में आदर पाओ॥
शूद्रों को दो प्यार, रात-दिन करते सेवा।
सेवा से ही मिले, सुयश की पावन मेवा॥
अगर यहां आते नहीं, दयानन्द ऋषिराज।
याद रखो! बनता नहीं, पावन आर्यसमाज॥
पावन आर्यसमाज, काम करता सुखकारी।
आर्यों का गुणगान, रही कर दुनिया सारी॥
भारतवीरो! उठो! बढ़ो! कर्त्तव्य निभाओ।
स्वयं आर्य बनो, जगत् को आर्य बनाओ॥

संपर्क-आर्य सदन, बहीन, जनपद-पलवल (हरयाणा)

आर्य वीर दल के प्रान्तीय कार्यालय का उद्घाटन एवं शिविर सम्पन्न

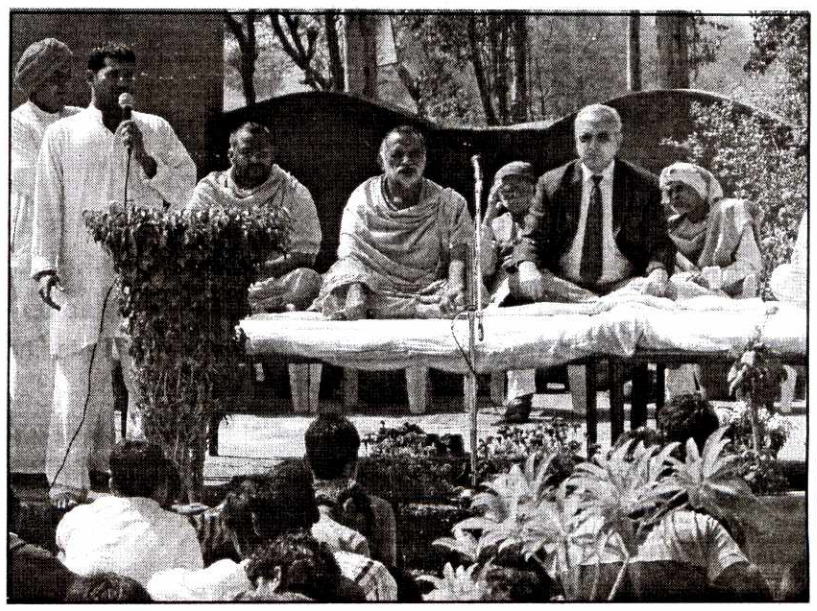

गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर में चल रहे 5 दिवसीय आवासीय शिविर का समापन 24 फरवरी 2013 को चौ० रणवीरसिंह प्रतिष्ठित समाजसेवी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्यातिथि अतिरिक्त उपायुक्त श्री पुष्पेन्द्रसिंह चौहान व विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रशासनिक अधिकारी प्रतिष्ठित समाजसेवी नाहरसिंह दिल्ली ने आर्य वीर दल को विशेष सहयोग किया। इस अवसर पर शिविरार्थियों ने हैरत-अंगेज भव्य व्यायाम प्रदर्शन दिखाया। आचार्य विजयपाल योगार्थी व संचालक उमेद शर्मा ने प्रान्तीय कार्यालय का उद्घाटन किया। सतीशार्य को कार्यालय प्रभारी का दायित्व दिया गया। चौ० रणवीरसिंह आर्य, चौ० नाहरसिंह आर्य, आचार्य विजयपाल जी, दानवीर चरणसिंह, उपसंचालक शिवदत्त आर्य, मण्डलपति श्यामार्य, होतीलालार्य, दर्शनदयाल शर्मा, विजयार्य, सुभाषार्य पानीपत, जयपालार्य फिरोजपुर झिरका, धर्मपाल शास्त्री भाण्डवा, सरपंच कृष्ण शास्त्री, दानवीर राधाकृष्णार्य आदि विशेष सहयोगियों का सम्मान किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन युवक हृदय सम्राट चन्द्रदेव ने किया। सभी शिविरार्थियों ने यज्ञोपवीत धारण करके आजीवन आर्य वीर दल, जो आर्यसमाज में नया रक्त लाने का कार्य कर रहा है, से जुड़कर कार्य करने व शराब, अण्डे-मांस, मछली, धूम्रपान आदि से दूर रहकर वेदोक्त जीवन जीने का संकल्प लिया।

शिविर के दौरान दो दिन स्वामी देवव्रत जी का भी प्रेरणादायक उद्बोधन हुआ। सुयोग्य व्यायाम शिक्षक सचिन आर्य व सतेन्द्रार्य ने व्यायाम प्रशिक्षण दिया। शिविरार्थियों को शारीरिक, बौद्धिक प्रशिक्षण के साथ-साथ आपदा प्रबन्धन अग्निशमन व प्राथमिक चिकित्सा का भी प्रशिक्षण दिया गया।

इस अवसर पर स्वामी योगानन्द, आचार्य सत्यानन्द, आचार्य आनन्दमित्र, आचार्य ऋषिपाल, चौ० पूर्णसिंह देशवाल, जयवीरार्य, दीपक हिन्दुस्तानी, प्रवीणार्य, भूदेव गुजरात, मोनू आर्य, योगेन्द्र एडवोकेट, नरेश पहलवान, प्राध्यापक बिशनार्य, कुलदीपार्य, ओमप्रकाश आर्य पहलवान, पोपसिंह आर्य, राजेशार्य, सत्यनारायण आर्य, देवेन्द्रार्य बादली, एसडीओ प्रवेशार्य, सत्यवीर सलेमपुरिया, पहलवान रविन्द्रार्य, अशोक शास्त्री, विद्यासागर, सुखराम, गुरुकुल के ब्रह्मचारी, आस-पास के गणमान्य व्यक्ति एवं समस्त शिविरार्थी उपस्थित थे।

—ब्र० नरेशार्य, गुरुकुल झज्जर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस के अवसर पर

वन्दना

टेक- ऋषिवर तुम आ जाओ, ऋषिवर तुम आ आजो।
वेदों की ज्योति को, इक बार जला जाओ।
ऋषिवर तुम आजाओ....

1. तुमने जग में आकर, जो जोत जलाई थी।
सब वेद पढ़ो मिलकर, यह बात बताई थी।
हम भूल रहे ऋषिवर, तुम राह दिखा जाओ।
ऋषिवर तुम आ जाओ....

2. वेदों के मार्ग से, क्यों लोग भटकते हैं।
पाखण्डी गुरुओं के, दलदल में फंसते हैं।
इन भोले लोगों को, तुम आर्य बना जाओ।
ऋषिवर तुम आ जाओ....

3. माता को ममता का, जो पाठ पढ़ाया था।
वेद पढ़ो तुम भी, कहकर समझाया था।
वह प्यार और ममता, इनमें भी दिखलाओ।
ऋषिवर तुम आ जाओ....

4. निज मार्ग से ऋषिवर, क्यों लोग भटकते हैं।
आपस में लड़ते हैं, फिर राह बदलते हैं।
मिल-जुलकर रहना है, तुम इनको समझाओ।
ऋषिवर तुम आ जाओ....

5. ईश्वर तो दयालु है, वह सबका स्वामी है।
तुम ही तो कहते थे, प्रभु अन्तर्यामी है।
अब वेद-सरस जीवन, हम-सबकी बना जाओ।
ऋषिवर तुम आ जाओ....

—सुरेन्द्र कुमार 'सरस', 2261/9 सूर्यनगर, गोहाना रोड, रोहतक मो. 9254069111

ओ३म्

शिक्षा, स्वास्थ्य व चरित्र-निर्माण का केन्द्र

गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक)

प्रवेश सूचना : सत्र 2013

प्रवेश परीक्षा 10 अप्रैल 25 अप्रैल एवं 10 मई

गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक) ने अत्यल्पकाल में जो कीर्ति अर्जित की है, उससे गुरुकुल की शिक्षा एवंव्यवस्था का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। गुरुकुल के सुविशाल भव्य भवन दूर से ही दृष्टिगोचर होते हैं। विद्यालय भवन, छात्रावास, सभागार, भोजनालय तथा व्यायामशाला, यज्ञशाला आदि के पृथक्-पृथक् रमणीय आधुनिक सुविधापूर्ण सुविशाल भवन सुशोभित हैं। गुरुकुल में आपको प्राचीन तथा अर्वाचीन शिक्षा का अनुपम सामंजस्य देखने को मिलेगा।

गुरुकुल की विशेषताएं—

- प्रविष्ट छात्रों का छात्रावास में रहना अनिवार्य।
- 10+2 तक C.B.S.E. बोर्ड दिल्ली से मान्यता।
- सन्ध्या-हवन, योग-प्राणायाम, नैतिक शिक्षा और नियमित दिनचर्या।
- प्रवेश हॉस्टल में रिक्त स्थानों पर निर्भर।
- इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स।
- आधुनिक स्मार्ट क्लास की व्यवस्था।
- कम्प्यूटर व सभी विज्ञान प्रयोगशालाएँ।
- 10+1, +2 में आर्ट एण्ड साईंस साइड।
- हिन्दी व अंग्रेजी मीडियम।

सम्पर्क सूत्र :- 08607776897, 01262-217550

कृपया ध्यान दें

उन सभी ग्राहकों से निवेदन है जिनका पत्रिका का शुल्क समाप्त हो चुका है, वे अपना वार्षिक शुल्क 150/- मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा '**आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक** के नाम से शीघ्र भेजें तथा जिन ग्राहकों को पत्रिका नहीं मिल रही है, वे कृपया अपनी ग्राहक संख्या, अपना पूरा पता, पिनकोड और मोबाइल नं० साफ-साफ लिखकर भेजें जिससे उन्हें समय पर पत्रिका पहुंच सके।

—सम्पादक

स्वास्थ्य-चर्चा...

आमाशयिक रोग

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, मो० : 9416133594

गतांक से आगे...

(2) तीक्ष्म अग्नि—पित्त की अधिकता से जठराग्नि तीक्ष्ण होती है। पित्त के गुण, उष्णता, तीक्ष्णता, न अति स्नेह, लघु आदि है, ये भाव पाचक अग्नि के हैं इसके अनुसार अग्नि तीव्र होती है अत: पित्त अग्निवर्धक होने के कारण पित्त प्रधान पुरुषों में पाचक रस अधिक बनता है।

(3) विषम अग्नि—वात की अधिकता से एक ही व्यक्ति की अग्नि कभी तो मन्द होती है और कभी तीव्र, वायु के गुण रुक्ष, लघु, शीत, विशद आदि हैं, कुछ लक्षण तो कफ से मिलते हैं और कुछ पित्त से, अत: पित्तान्वित अवस्था में अग्निवर्धक सिद्ध होता है और कफान्वित अवस्था में अग्नि शामक-मन्द अग्नि वाला बन जाता है।

(4) सम अग्नि—सामान्य प्रकृति वाले पुरुष जिनमें कफ, पित्त और वात तीनों समुचित रूप से, सही मात्रा में होते हैं, उनमें अग्नि भी सम होती है।

जब तक अग्नि सम होती है अजीर्ण आदि कोई रोग नहीं होता, विषम होने पर रोगों का प्रादुर्भाव होने लगता है। विषम से दो प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं या तो मन्द अग्नि वाले रोग अथवा तीक्ष्ण अग्नि वाले रोग। सभी अजीर्ण त्रिदोषक होते हैं, परन्तु एक न एक दोष बढ़ा होने के कारण उसी दोष के नाम से अजीर्ण को पुकारते हैं—मन्द अग्नि से आम अजीर्ण, रस-शेष अजीर्ण (इसको अग्निमांद्य से पृथक् रोग माना गया है परन्तु अर्थ के अनुसार व लक्षणों का विचार करते हुए भी रसशेष का समावेश अग्निमांद्य में ही करना चाहिए।), अग्निमांद्य (अग्निमांद्य में अत्यल्प भोजन बहुत काल तक भी नहीं पचता) तीक्ष्ण अग्नि से विदग्ध अजीर्ण, अम्लपित्त और अन्नद्रव शूल (आमाशय व्रण) तथा परिणाम शूल (पक्वाशय व्रण) आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

भस्मक रोग में भी अग्नि बहुत तीव्र होती है परन्तु भस्मक रोग का तीक्ष्ण अग्नि में समावेश नहीं होता। भस्मक रोग में तीनों प्रकार की अग्नि पाचक अग्नि, धातु अग्नि और पंच-महाभूत अग्नि सीमातीत तीक्ष्ण होती है, आमाशय और पक्वाशय में आहार जाते ही पच जाता है। पुन: भूख लग जाती है। बार-बार खाए तो भी यही अवस्था रहती है। इसके अतिरिक्त धातु अग्नि शरीर के धातुओं को भी भस्म करने लगता है, रोगी खाता-पीता क्षीण होता जाता है।

विदग्ध अजीर्ण और अम्लपित्त के साथ कफ़ का विकार भी शामिल होता है। पित्त आधिक्य में कफ के विकार के मिश्रण होने से आहार का पाचन भली प्रकार नहीं होता। कफ़ की अधिकता के कारण पाचन करने वाले रस की उपस्थिति में भी पाचन क्रिया नहीं हुई। विदग्ध अजीर्ण की बढ़ी हुई अवस्था को ही अम्लपित्त कह सकते हैं।

आमाशय रस ह्रास— कारण और दुष्परिणाम। निम्नोक्त कारणों से आमाशय रस कम बनता है या नहीं बनता।

(1) **सहज प्रवृत्ति**—जन्म से ही आमाशय में रस बनने की शक्ति कम होती है, प्राय: एक परिवार के कई व्यक्तियों में यह दोष होता है, ऐसे व्यक्तियों को विशेष रोग नहीं होता। प्रकृति उनकी इस कमी को अन्यत्र अंत्र में अधिक रस बनाकर पूर कर देती है।

(2) बाल्यकाल में या किशोर अवस्था में ऐसे रोग हो जाते हैं तथा क्षीणकारी जीर्ण रोग राजयक्ष्मादि अथवा वातश्लेष्मिकादि तीव्र संक्रामक रोग जिनके परिणाम स्वरूप आमाशय कला सदा के लिए क्षीण हो जाती है और उचित परिमाण में रस नहीं बनाती। समय पाकर कुछ वर्षों के बाद, प्रकृति इस कमी को पूरा करने के लिए अंत्र के पाचक रस को बढ़ा देती है।

(3) चिरकाल तक (i) अत्यधिक शारीरिक अथवा मानसिक परिश्रम करते रहने से (ii) अनिद्रा से, (iii) अयुक्त आहार से आमाशय में रस कम बनने लगता है।

(4) तीव्र संक्रामक रोगों के आक्रमण से यथा वातश्लेष्मिक (Influenza) ज्वर।

(5) तीव्र आमाशय कला शोध।

(6) जीर्ण आमाशय कला शोध।

(7) जीर्ण आमाशय व्रण, इसमें पहले तो आमाशय रस अधिक बनता है बाद में कम बनता है इसमें आमाशय कला शोध हो जाती है, जिसके कारण आमाशय कला क्षीण होकर रस बनाने में असमर्थ हो जाती है।

दुष्परिणाम-(1) आमाशय रस में दो चीजें विशेष होती है। (A) Hydrochloric acid (B) Pepsin बहुधा Hydrochloric acid का ही ह्रास होता है, विरल अवस्था में पैपसीन का। लेकिन यदि सिर्फ Hydrochloric acid का ह्रास हो तो अकेला पैपसीन भी कार्य नहीं कर सकता, अत: आमाशय रस के ह्रास का अर्थ Hydrochloric acid का ह्रास ही समझना चाहिए। आमाशय रस के ह्रास से या कमी से भी अग्निमांद्य आम अजीर्ण आदि रोग हो जाते हैं।

(2) पाण्डु, विलोहितता रोग (Pernicious Anaemia) उत्पन्न हो जाते हैं।

(3) आमाशय रस में उपस्थित Hydrochloric acid खान-पान में जो कीटाणु होते हैं, उन्हें नष्ट करता है। आमाशय रस के अभाव में अतिसार विशूचिका, प्रवाहिका आदि रोग तथा आन्त्रिक ज्वर (Enteric fever), उपान्त्रिक ज्वर (Paratyphoid) आदि रोग शीघ्र उत्पन्न हो जाते हैं।

ई कोलाई (E-coli) आदि अनेक कीटाणु साधारण रूप से बृहदन्त्र में बसते हैं। परन्तु वे विकार उत्पन्न नहीं करते, यदि ऊपर को सरक जायें तो पक्वाशय में आने वाले आमाशय रस से वे मर जाते हैं। आमाशय रस के अभाव में वे ऊपर को सरकते हुये पित्त प्रणाली में पहुँच जाते हैं और पित्ताशय शोथ उत्पन्न कर देते हैं। आमाशय रस कम बने तो श्लेष्मा अधिक बनती है। जब आमाशय कला सर्वथा क्षीण हो जाये और रस उत्पादक सैल न रहें, तब न तो रस बनता है और ना ही श्लेष्मा।

आमाशय रस आधिक्य के कारण और दुष्परिणाम निम्न कारणों से आमाशय रस अधिक बनता है—

(1) **सहज प्रवृत्ति**-अधिकतर व्यक्तियों में आमाशय रस की अधिकता पाई जाती है उनमें स्वभाव ही कारण होता है, ऐसे व्यक्ति ही प्राय: आमाशय रस आधिक्य के दुष्परिणामों से पीड़ित होते हैं।

(2) राग, द्वेष, क्रोध, चिन्ता से आमाशय रस अधिक बनता है। यह तात्कालिक होता है। जो स्वभाव से क्रोधी, वहमी, द्वेषी या चिन्तातुर हो उनमें स्वभाव से ही रस अधिक होता है। लेकिन भय से रस कम बनता है।

(3) खट्टे, चरपरे, तीखे पदार्थों के सेवन से आमाशय कला को उत्तेजना मिलती है, आमाशय रस अधिक बनता है यदि यह पदार्थ अत्यधिक खाये जायें तो क्षोभ उत्तेजना का स्थान ले लेता है और आमाशय कला की शोथ हो जाती है, शोथ में आमाशय रस कम बनता है।

(4) अधिक धूम्रपान से अथवा मद्यपान से भी आमाशय रस अधिक बनता है।

दुष्परिणाम-(1) आमाशय रस की अधिकता से आहार आमाशय से उचित समय पर पक्वाशय में नहीं जाता, अधिक काल तक आमाशय में रहता है। परिणाम स्वरूप विदग्ध अजीर्ण के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

(2) रोग शनै:-शनै: बढ़ता जाये तो अम्लपित्त के लक्षण हो जाते हैं।

(3) आमाशय व्रण, अन्नद्रव, शूल या पक्वाशय शूल के होने की सम्भावना रहती है।

स्वस्थ अवस्था में आमाशय कला पर आमाशयिक रस का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, वही रस कठोर से कठोर मांस तन्तुओं को और अन्य प्राणियों की कला को खा जाती है। मृत्यु के बाद वही रस यदि मरते समय आमाशय में हो तो उस अपनी कला को खा जाता है। जीवित अवस्था में आमाशय रस चाहे कितना ही तीक्ष्ण और प्रबल क्यों न हो अपनी आमाशय कला पर कोई प्रभाव नहीं डालता। इसके अनेक कारण हैं, प्रधान कारण आमाशय में श्लेष्मा की उपस्थिति है, यदि श्लेष्मा ना बने तो आमाशय कला खाई जाती है और वहां व्रण बनने का भय रहता है। जब कला किसी कारणवश दुर्बल हो तब भी व्रण हो सकता है। कला में दुर्बलता तब आती है जब कला की धमनिका का अवरोध हो जाये, रक्त विहीनता के कारण वहाँ की कला मर जाती है।

खाली पेट मद्यपान और अधिक धूम्रपान तथा अधिक मद्यपान, उनके विषैले प्रभाव से अथवा सदा कठोर और दृढ़ वस्तुओं के खाते रहने से आमाशय की कला क्षुब्ध रहती है। उसमें सहनशक्ति कम हो जाती है, वहाँ पर व्रण बनने का भय रहता है।

जीर्ण आमाशय कला शोथ में भी कला अति क्षीण होकर व्रण का शिकार बन सकती है।

क्रमश: अगले अंक में....

अनमोल भजन

दयानन्द देव—वेदों का उजाला लेके आये थे।
करों में ओ३म् की पावन पताका लेके आये थे॥

न थे धन-धाम मठ-मन्दिर, न संग चेली न चेला थे।
हृदय में अटल विश्वास प्रभु का लेके आये थे।

अविद्या सिन्धु से अगणित जनों के पार करने को।
परम सुखदायिनी सतज्ञान नौका लेके आये थे॥

गौ-विधवा-दलित-दुखिया-अनाथों दीनजन के हित।
नयन में अश्रु कण मानस में करुणा लेके आये थे॥

कोई माने न माने सच तो ये ऋषिराज ही पहले।
स्वराज्य स्थापना का पावन मन्त्र लेके आये थे॥

पिलाया जहर का प्याला उन्हीं नादान लोगों ने।
कि जिनके लिये अमृत का प्याला लेके आये थे॥

'प्रकाश' आदर्श शिक्षा पुनः विस्तार करने को।
वही प्राचीन गुरुकुल का सन्देशा लेके आये थे॥

(2)

ईश्वर को छोड़, पत्थर का करें सन्मान जो।
खुद बना पत्थर के टुकड़ों को, कहें भगवान् जो॥

सिर झुका पत्थर से मांगें, ऐसे हैं इंसान यह।
इनसे अच्छे जानवर, चूहे, बिल्ली हैवान यह॥

जो समझते हैं, यह पत्थर है, नहीं भगवान यह।
पूजा का सब माल खायें, समझें बुत पाषाण यह॥

बेधड़क उन पर चढ़ें, मूतें, करें अपमान यह।
जानवर होते हुये, इनकी अच्छी पहचान यह॥
जड़वस्तु के पूजकों से, इनका अच्छा ज्ञान यह॥

कितनी मूर्ख हो चुकी, अब ऋषियों की संतान है।
देख अवस्था इनकी **'सेवक'** हो रहा हैरान है॥

भेंटकर्त्ता : **सूबेदार करतारसिंह आर्य-सेवक,**
आर्यसमाज गोहाना मण्डी, जिला सोनीपत

आर्यसमाज सफीदों का वार्षिक महोत्सव

दिनांक 15, 16 व 17 मार्च, 2013 (शुक्र, शनि, रविवार)
स्थान : पुरानी अनाजमण्डी, सफीदों जिला जीन्द

आमंत्रित विद्वान्—आचार्य **बलदेव जी महाराज** (प्रधान-सा० आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली), **आचार्य विजयपाल जी** (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा), **प्रो० ओमकुमार जी** (वैदिक प्रवक्ता, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा), **आचार्य शिवदत्त पाण्डे** (उपदेशक, सुलतानपुर, यू०पी०), **आचार्य राजेन्द्र** (गुरुकुल कालवा), **आचार्य आत्मप्रकाश** (गुरुकुल कुम्भाखेड़ा, हिसार)।

भजनोपदेशक—**महाशय कुलदीप आर्य** (बिजनौर, यू०पी०), **बहिन अंजलि आर्या** (घरौंडा, करनाल)।

अतः सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि वार्षिक उत्सव में आप अवश्य पहुँचकर धर्म-लाभ उठावें। —**संजीव मुआना, मंत्री एवं संयोजक**

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर	9 से 10 मार्च 2013
2.	आर्यसमाज सफीदों जिला जीन्द	15 से 17 मार्च 2013
3.	इन्द्रावती न्यास (ट्रस्ट) बालधनकलां (रेवाड़ी)	19 से 20 मार्च 2013
4.	आर्यसमाज आहुलाना जिला सोनीपत	19 से 21 मार्च 2013
5.	आर्यसमाज शेखपुरा खालसा जिला करनाल	22 से 24 मार्च 2013
6.	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	22 से 24 मार्च 2013
7.	आर्यसमाज रायपुर रोडान जिला करनाल	22 से 24 मार्च 2013
8.	आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड जीन्द	22 से 24 मार्च 2013
9.	दयानन्दमठ दीनानगर (पंजाब)	1 से 13 अप्रैल 2013

—**प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता**

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज पटेल नगर सैक्टर-15 पार्ट-II गुड़गाँव की ओर से ता० 16 जनवरी से 20 जनवरी 2013 रविवार तक पाँच दिनों तक पटेल नगर व सैक्टर-15 पार्ट-II के पार्कों में एवं गली-मोहल्ले में विभिन्न जगहों पर वेदप्रचार का कार्य किया गया।

आचार्य देशराज जी भरतपुर (राजस्थान) एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री विमलदेव जी अग्निहोत्री बरेली (उत्तर-प्रदेश) ने वेद-उपदेश, घर-गृहस्थी कैसे सुखी रहे तथा ईश्वर एक है एवं वेद ईश्वरीय ज्ञान है, आर्यसमाज के दूसरे नियम की विस्तार से चर्चा की। विमलदेव जी भजनोपदेशक ने राम वनवास का ऐसा चित्रण अपने भजनों के माध्यम से किया कि लोगों की आंखें नम हो गईं। उपस्थित लोगों ने प्रचार कार्यक्रम को बहुत पसन्द किया तथा आग्रह किया कि समय-समय पर आर्यसमाज मन्दिर से बाहर निकलकर गली-चौराहों-पार्कों में ऐसा प्रचारकार्य होते रहने चाहियें।

इस अवसर पर डॉ० सुनील आर्य के छोटे बच्चों ने सन्ध्या के कुछ मन्त्र एवं स्वामी दयानन्द जी के बारे में माइक पर जनता के बीच बोलकर सभी को मोहित कर दिया।

लोगों ने उत्साहपूर्वक दान देकर भरपूर सहायता की। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पदमचन्द आर्य प्रधान, ईश्वर दधिया मन्त्री, रामअवतार गोयल, सुरेश गुप्ता, जयप्रकाश शर्मा, लालचन्द गुप्ता, वेदप्रकाश मनचन्दा कोषाध्यक्ष एवं सभी सदस्यों का भरपूर सहयोग रहा।

—पदमचन्द आर्य, प्रधान, आर्यसमाज पटेल नगर सैक्टर-15 पार्ट-II गुड़गाँव

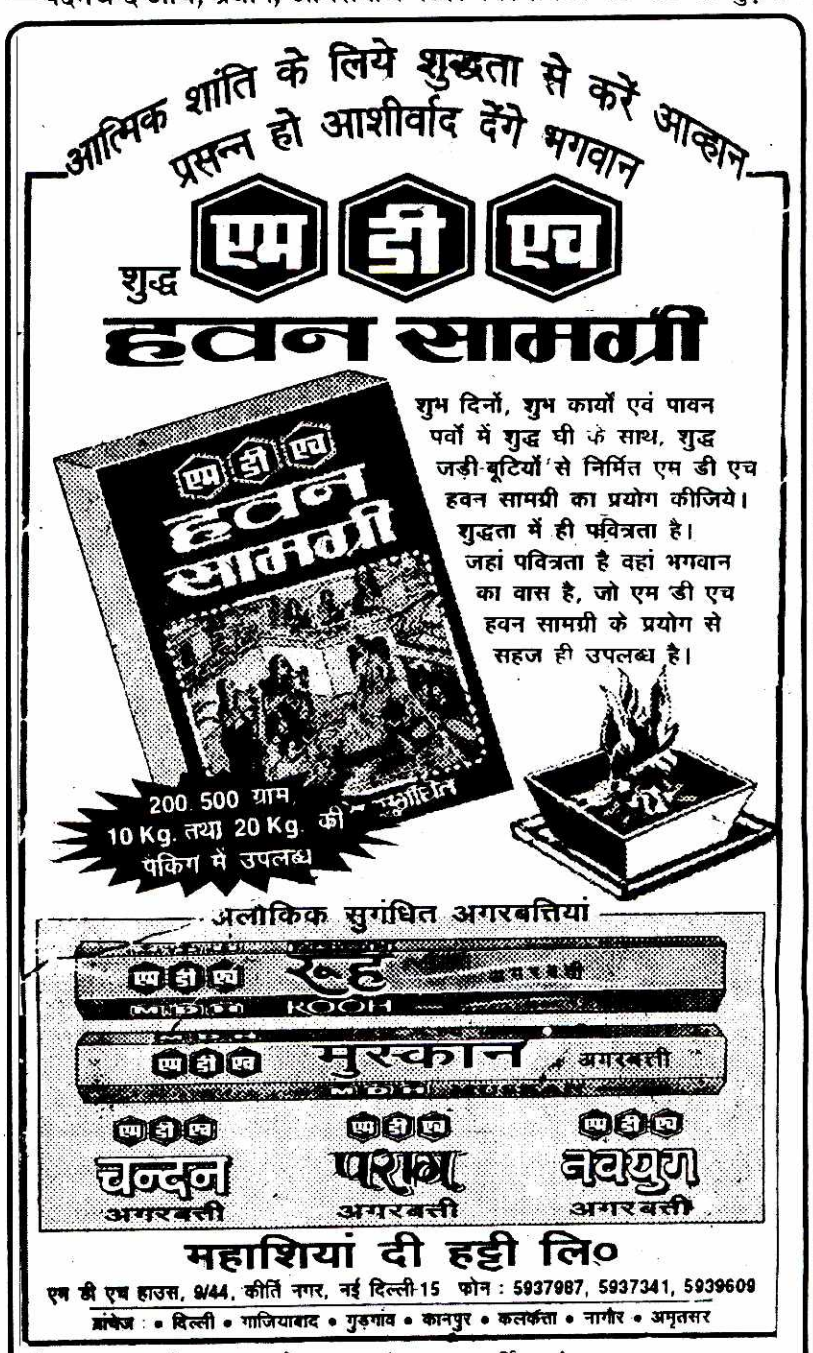

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

आर्य-संसार

जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन

दिनांक 11.2.13 को आर्य निवास नलवा (हिसार) में श्री सुरेन्द्रसिंह फौजी के सुपुत्र श्री युद्धवीर आर्य का 19वें जन्म दिवस पर यज्ञ का आयोजन किया गया। सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही ने पंचमहायज्ञ की सरल शब्दों में व्याख्या की तथा वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी दी। परमपिता परमेश्वर से श्री युद्धवीर आर्य की लम्बी आयु व अच्छे स्वास्थ्य की कामना की। यज्ञ में उपस्थित श्री भलेराम आर्य, श्रीमती सुनेहरी आर्या, बिमला आर्या, सरोज आर्या, पवन कुमार आर्य, ज्ञानदेवी आदि ने आशीर्वाद दिया। शान्तिपाठ के बाद देशी घी का प्रसाद बांटा गया।

—नरेन्द्र आर्य, मन्त्री
आर्यसमाज नलवा, जिला हिसार

आर्यसमाज छानीबड़ी (राज.) का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज छानीबड़ी का 27वां वार्षिक उत्सव 18-19-20 फरवरी 2013 को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन यज्ञ के बाद शानदार शोभायात्रा निकाली गई। बच्चों ने बड़े उत्साह से नारे लगाये। वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द ने ध्वजारोहण किया। यज्ञ पर तीन दिन कई यजमानों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। कई छात्र-छात्राओं ने यज्ञोपवीत धारण किया। उत्सव में हाजिरी रिकार्ड तोड़ थी। छात्रों ने कारगिल का प्रेरणादायक नाटक किया। भैरोसिंह व्यायाम शिक्षक के नेतृत्व में आर्य वीर दल के स्थानीय युवकों ने शानदार व्यायाम प्रदर्शन किया। लोगों ने दिल खोलकर दान दिया।

इस उत्सव पर स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास, स्वामी आर्यवेश, स्वामी श्रद्धानन्द पलवल, सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, श्रीमती शोभासिंह डूडी जिला प्रमुख (हनुमानगढ़) श्रीमती कान्ता पूनिया आदि ने राष्ट्ररक्षा, नारी-उत्थान, शराबबन्दी, गोरक्षा, कन्या भ्रूणहत्या, चरित्र-निर्माण, अन्धविश्वास, धार्मिक पाखण्ड आदि जटिल विषयों पर विचार रखे तथा पं० सहदेव सिंह बेधड़क (उत्तर प्रदेश), पं० रामनिवास आर्य (पानीपत), फूलसिंह आर्य (गोरछी) ने समाजसुधार के शिक्षाप्रद भजन रखे। आर्यसमाज के प्रधान श्री रामेश्वरलाल आर्य, मन्त्री श्री जयवीर आर्य तथा गांव के सरपंच नत्थूराम मान ने विद्वानों का स्वागत धन्यवाद किया। कई गांवों के सरपंचों को स्वामी ईशानन्द का चित्र व वैदिक साहित्य भेंट किया। मंच का संचालन मा० नोरंगलाल आर्य, जगतसिंह आर्य ने किया। **—मानसिंह आर्य अध्यापक**

निर्वाचन

आर्यसमाज गोहाना शहर जिला सोनीपत के वार्षिक चुनाव में 3 फरवरी 2013 को आर्यसमाज मन्दिर गोहाना शहर में सर्वसम्मति से निम्न कार्यकारिणी को चुना गया—

संरक्षक-श्री ओमप्रकाश खान, प्रधान-श्री भूषणदेव हसीजा, उपप्रधान-श्री सुभाष वर्मा, मन्त्री-डॉ० सन्दीप सेतिया, उपमन्त्री-श्री पविन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री रामकिशन परूथी।

—भूषणदेव हसीजा, प्रधान आर्यसमाज गोहाना शहर जिला सोनीपत

योग-ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर, जम्मू में महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 7 से 14 अप्रैल 2013 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराये जायेंगे तथा दर्शन-पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इस अवसर पर सामवेद पारायणयज्ञ का आयोजन भी किया गया है। आश्रम में महात्मा जी के सान्निध्य में पहले लगाये गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं अत: इच्छुक साधक विस्तृत जानकारी व अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं० 09419107788, 09419796949 अथवा 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

—भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में

नि:शुल्क ध्यान योग शिविर एवं बृहद् यज्ञ

(सोमवार दिनांक 18 मार्च से रविवार 24 मार्च 2013 तक)

शिविराध्यक्ष : **डॉ० स्वामी देवव्रत जी** प्रधान सार्वदेशिक आर्य वीर दल
यज्ञ ब्रह्मा : **पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी,** मुख्याधिष्ठाता आश्रम

मुख्यवक्ता : **आचार्य आर्यनरेश,** उद्गीथ साधना स्थली, सोलन, हिमाचल, **राजहंस मैत्रेय** आचार्य आश्रम, **पं० खुशीराम जी** वेदप्रचार अधिष्ठाता, आ.प्र.नि. सभा दिल्ली, **पं० रामजीवन जी योगाचार्य,** दिल्ली।

भजनोपदेशक : **पं० रमेशचन्द्र जी कौशिक** झज्जर वैदिक वृद्धाश्रम की महिला सत्संग मण्डली, गुरुकुल के छात्रों के मधुर भजनों का कार्यक्रम होगा।

हर्षवर्धक सूचना : आप सभी आश्रम हितैषी प्रेमियों को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ ट्रस्ट द्वारा संचालित अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर में साधना के कमरे, निवास के कमरे, चिकित्सालय, सत्संग भवन एवं भव्य यज्ञशाला आदि के सभी भवन बनकर तैयार हो गये हैं। उद्घाटन समारोह रविवार 7 अप्रैल 2013 को हो रहा है जिसमें यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम विशाल स्तर पर आयोजित किया जायेगा, जिसमें प्रसिद्ध संन्यासी, विद्वान् एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस शुभ अवसर पर प्रसिद्ध राजनेताओं को भी आमन्त्रित किया गया है। उपरोक्त कार्यक्रम में आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

निवेदक :-

सत्यानन्द आर्य (प्रधान), **दर्शनकुमार अग्निहोत्री** (मन्त्री)
आत्मशुद्धि आश्रम (पंजीकृत न्यास) बहादुरगढ़-124507, जिला झज्जर (हरयाणा) दूरभाष : 01276-230195, चलभाष : 09416054195

साप्ताहिक 'आर्य प्रतिनिधि' के स्वामित्व आदि का विवरण

फार्म IV (नियम-8) देखिये

1.	प्रकाशन स्थान	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
2.	प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
3.	मुद्रक का नाम	सत्यवीर शास्त्री
	(क) क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
	(ख) यदि विदेशी है तो मूल देश ?	नहीं
	पता—	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
4.	प्रकाशक का नाम	सत्यवीर शास्त्री
	(क) क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
	(ख) यदि विदेशी है तो मूल देश ?	नहीं
	पता—	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
5.	संपादक का नाम	सत्यवीर शास्त्री
	(क) क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
	(ख) यदि विदेशी है तो मूल देश ?	नहीं
	पता—	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के अंशधारी हैं।	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

मैं सत्यवीर शास्त्री, एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरे ज्ञान और विश्वासानुसार सही हैं।

दिनांक : 7 मार्च 2013

ह० सत्यवीर शास्त्री
प्रकाशक

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

पितृयज्ञ तर्पण और श्राद्ध

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

पञ्च महायज्ञों में तीसरा पितृयज्ञ है। उसके दो भेद हैं—एक तर्पण और दूसरा श्राद्ध। उनमें से जिस कर्म करके विद्वान् रूप देव, ऋषि और पितरों को सुखयुक्त करते हैं, सो 'तर्पण' कहाता है। तथा जो उन लोगों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना है, उसी को 'श्राद्ध' जानना चाहिये। यह तर्पण आदि कर्म विद्यमान अर्थात् जीते हुये जो प्रत्यक्ष हैं उन्हीं में घटता है, मरे हुओं में नहीं। क्योंकि मृतकों का प्रत्यक्ष होना असम्भव है। इसलिये उनकी सेवा नहीं हो सकती तथा जो उनके लिये कोई पदार्थ दिया चाहे, वह भी उनको नहीं मिल सकता। इससे केवल विद्यमानों की ही श्रद्धापूर्वक सेवा करने नाम 'तर्पण' और 'श्राद्ध' वेदों में कहा है। क्योंकि सेवा करने योग्य और सेवा करने वाले इन दोनों ही के प्रत्यक्ष होने से यह सब काम हो सकता है, दूसरे प्रकार से नहीं। सो तर्पण आदि कर्म से सत्कार करने योग्य तीन हैं—देव, ऋषि और पितर।

देवों में प्रमाण—

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ (यजु० अ० 19, मंत्र 39)

द्वयं वा इदं न तृतीयमस्ति। सत्यं चैवानृतं च, सत्यमेव देवा अनृतं मनुष्या, इदमहमनृतात्सत्यमुपैमीति तन्मनुष्येभ्यो देवानुपैति॥ स वै सत्यमेव वदेत्। एतद्ध वै देवा व्रतं चरन्ति तत्सत्यम्। तस्मात्ते यशो, यशो ह भवति य एवं विद्वान्सत्यं वदति॥ (शतपथ कां० 1, अ० 1, ब्रा० 1, कं० 4,5)

विद्वाꣳसो हि देवाः॥ (शतपथ कां० 3, अ० 7, ब्रा० 3, कं० 10)

(पुनन्तु०) हे जातवेद परमेश्वर! आप सब प्रकार से मुझे पवित्र कीजिये और जो आपके उपासक आपकी आज्ञा पालते हैं अथवा जो कि विद्वान् ज्ञानी पुरुष कहाते हैं, वे मुझको विद्यादान से पवित्र करें और आपके दिये विशेष ज्ञान वा आपके विषय के ध्यान से हमारी बुद्धियाँ पवित्र हों। तथा (पुनन्तु विश्वा भूतानि) सब संसारी जीव आपकी कृपा से पवित्र होकर आनन्द में रहें।

(द्वयं वा०) दो लक्षणों के पाये जाने से मनुष्यों की दो संज्ञा होती हैं, अर्थात् एक देव और दूसरी मनुष्य। उनमें भेद होने के सत्य और झूठ दो कारण हैं। (सत्यमेव०) जो कोई सत्यभाषण, सत्यस्वीकार और सत्यकर्म करते हैं वे देव, तथा जो झूंठ बोलते, झूंठ मानते और झूंठ कर्म करते हैं, वे मनुष्य कहाते हैं। इसलिये झूंठ को छोड़कर सत्य को प्राप्त होना सबको उचित है। इस कारण से बुद्धिमान् लोग निरन्तर सत्य ही कहें, मानें और करें। क्योंकि सत्यव्रत आचरण करने वाले जो देव हैं, वे तो कीर्त्तिमानों में भी कीर्त्तिमान् होके सदा आनन्द में रहते हैं। परन्तु उनसे विपरीत चलने वाले मनुष्य दुःख को प्राप्त होकर सब दिन पीड़ित ही रहते हैं।

(विद्वाꣳसो०) इससे सत्यधारी विद्वान् ही देव कहाते हैं।

ऋषियों में प्रमाण—

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥

(यजुर्वेद अ० 31, मं० 9)

अथ देवानुब्रुवीत। तेनर्षिभ्य ऋणं जायते तद्धयेभ्य एतत् करोत्यृषीणां निधिगोप इति ह्यनूचानमाहुः॥ (शतपथ कां० 1, अ० 7, ब्रा० 2, कं० 3)

अथार्षेयं प्रवृणीते। ऋषिभ्यश्चैवैनमेतद्देवेभ्यश्च निवेदयत्ययं महावीर्यो यो यज्ञं प्रापदिति तस्मादार्षेयं प्रवृणीते॥ (शतपथ कां० 1, अ० 4, ब्रा० 2, कं० 3)

(तं यज्ञं बर्हिषि) जो सबसे प्रथम प्रकट था, जो सब जगत् का बनाने वाला है और सब जगत् में पूर्ण हो रहा है, उस यज्ञ अर्थात् पूजने योग्य परमेश्वर को, जो मनुष्य हृदयरूप आकाश में अच्छे प्रकार से प्रेमभक्ति सत्य आचरण करके पूजन करता है, वही उत्तम मनुष्य है। ईश्वर का यह उपदेश सबके लिये है। (तेन देवा अयजन्त साध्याः) उसी परमेश्वर के वेदोक्त उपदेशों से, (देवाः) जो विद्वान्, (साध्याः) जो ज्ञानी लोग, (ऋषयश्च ये) ऋषि लोग जो वेदमन्त्रों के अर्थ जानने वाले और अन्य भी मनुष्य जो परमेश्वर के सत्कारपूर्वक सब उत्तम ही काम करते हैं, वे ही सुखी होते हैं। क्योंकि सब श्रेष्ठ कर्मों के करने के पूर्व ही उसका स्मरण और प्रार्थना अवश्य करनी चाहिये और दुष्ट कर्म करना तो किसी को उचित ही नहीं।

(अथ यदेवा०) जो सब विद्याओं को पढ़के औरों को पढ़ाना है, यह ऋषिकर्म कहाता है। और उससे जितना कि मनुष्यों पर ऋषियों का ऋण हो, उस सब की निवृत्ति उनकी सेवा करने से होती है। इससे जो नित्य विद्यादान ग्रहण और सेवा कर्म करना है, वही परमेश्वर आनन्दकारक है और यही व्यवहार (निधिगोप) अर्थात् विद्याकोष का रक्षक है।

(अथार्षेयं प्रवृणीते) विद्या पढ़के सबों को पढ़ाने वाले ऋषियों और देवों की प्रिय पदार्थों से सेवा करने वाला विद्वान् बहुपराक्रमयुक्त होकर विशेष ज्ञान को प्राप्त होता है। इससे आर्षेय अर्थात् ऋषिकर्म को सब मनुष्य स्वीकार करें।

पितरों में प्रमाण—

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥ (यजुर्वेद अ० 2, मं० 34)

आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

(यजुर्वेद अ० 19, मं० 58)

(ऊर्जं वहन्ती०) पिता वा स्वामी अपने पत्र, पौत्र, स्त्री और नौकरों को इस प्रकार आज्ञा देवें कि (तर्पयत मे०) जो-जो हमारे मान्य पिता, पितामहादि, माता, मातामहादि, और आचार्य तथा इनसे भिन्न भी विद्वान् लोग, जो अवस्था वा ज्ञान में बड़े और मान्य करने योग्य हैं, तुम लोग उनकी (ऊर्जं०) उत्तम-उत्तम जल, (अमृतम्) रोग नाश करने वाले उत्तम अन्न, (परिस्रुतम्) सब प्रकार के उत्तम फलों के रस आदि पदार्थों से नित्य सेवा किया करो, कि जिससे वे प्रसन्न होके तुम लोगों को सदा विद्या देते रहें। क्योंकि ऐसा करने से तुम लोग भी सदा प्रसन्न रहोगे। (स्वधा स्थ०) और ऐसा विनय सदा रखो कि हे पूर्वोक्त पितर लोगो! आप हमारे अमृतरूप पदार्थों के भोगों से तृप्त हूजिये और हम लोग जो-जो पदार्थ आप लोगों की इच्छा के अनुकूल निवेदन कर सकें, उन उनकी आज्ञा किया कीजिये। हम लोग मन, वचन और कर्म से आपके सुख करने में स्थित हैं, आप किसी प्रकार का दुःख न पाइये। क्योंकि जैसे आप लोगों ने बाल्यावस्था और ब्रह्मचर्याश्रम में हम लोगों को दुःख दिया है, वैसे ही हमको भी आप लोगों का प्रत्युपकार करना अवश्य चाहिये कि जिससे हम लोगों को कृतघ्नता दोष न प्राप्त हो।

(आ यन्तु नः०) 'पितृ' शब्द से सबके रक्षक श्रेष्ठ स्वभाव वाले ज्ञानियों का ग्रहण होता है। क्योंकि जैसी रक्षा मनुष्यों की सुशिक्षा और विद्या से हो सकती है, वैसी किसी दूसरे प्रकार से नहीं। इसीलिये जो विद्वान् लोग मनुष्यों को ज्ञानचक्षु देकर उनके अविद्यारूपी अन्धकार के नाश करने वाले हैं, उनको 'पितर' कहते हैं। उनके सत्कार के लिये मनुष्य मात्र को ईश्वर की आज्ञा है कि वे उन आते हुये पितर लोगों को देखकर अभ्युत्थान अर्थात् उठके प्रीतिपूर्वक कहें कि—आइये! बैठिये! कुछ जलपान कीजिये और खाने-पीने की आज्ञा दीजिये। पश्चात् जो-जो बातें उपदेश करने के योग्य हैं, सो-सो प्रीतिपूर्वक समझाइये कि जिससे हम लोग भी सत्य विद्यायुक्त होके सब मनुष्यों के पितर कहावें।

और सदा ऐसी प्रार्थना करें कि हे परमेश्वर! आपके अनुग्रह से (सोम्यासः) जो शीलस्वभाव और सबको सुख देने वाले विद्वान् लोग (अग्निष्वात्ताः) अग्नि नाम परमेश्वर और रूप गुणवाले भौतिक अग्नि की अलग-अलग करने वाली विद्युत् रूप विद्या को यथावत् जानने वाले हैं, वे इस विद्या और सेवा यज्ञ में (स्वधया मदन्तः) अपनी शिक्षा विद्या के दान और प्रकाश से अत्यन्त हर्षित होके (अवन्त्वस्मान्) हमारी सदा रक्षा करें। तथा उन विद्यार्थियों और सेवकों के लिये भी ईश्वर की आज्ञा है कि जब-जब वे आवें वा जावें, तब-तब उनको उत्थान नमस्कार और प्रियवचन आदि से सन्तुष्ट रखें। तथा फिर वे लोग भी अपने सत्यभाषण से निर्वैरता और अनुग्रह आदि सद्गुणों से युक्त होकर अन्य मनुष्यों को उसी मार्ग में चलावें और आप भी दृढ़ता के साथ उसी में चलें। ऐसे सब लोग छल और लोभादि रहित होकर परोपकार के अर्थ अपना सत्य व्यवहार रखें। (पाथिभिर्देवयानैः) उक्त भेद से विद्वानों के दो मार्ग होते हैं—एक देवयान और दूसरा पितृयान। अर्थात् जो विद्यामार्ग है वह देवयान और जो कर्मोपासना मार्ग है वह पितृयान कहाता है। सब लोग इन दोनों प्रकार के पुरुषार्थ को सदा करते रहें।

महर्षि दयानन्द महाराज ने '**ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**' में पञ्चमहायज्ञ विषय के पितृयज्ञ प्रकरण में पितरों के सम्बन्ध में लगभग बीस मन्त्रों के अर्थ प्रस्तुत किये हैं। पितर कौन होते हैं और उनकी आज्ञापालन सेवा करनी चाहिये यह उपदेश प्रदान किया है। पितृयज्ञ में देव, ऋषि और पितर इनका समावेश होता है। यह विस्तार से समझाया गया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।